```
AllGuideSite:
Digvijay
Arjun
Sanskrit Anand Std 9 Digest Chapter 4 विध्यर्थमाला Textbook Questions and Answers
भाषाभ्यासः
श्लोकः 1
1. एकवाक्येन उत्तरत।
प्रश्न अ.
विद्यार्थी किं त्यजेत् ?
उत्तरम् :
विद्यार्थी सुखं त्यजेत् ।
प्रश्न आ.
सुखार्थी किं त्यजेत् ?
उत्तरम् :
सुखार्थी विद्या त्यजेत् ।
2. सन्धिविग्रहं क्रत।
प्रश्न 1.
   1. त्यजेद्विद्याम्
   2. त्यजेत्सुखम्
   3. कुतो विद्या
  4. कुतो विद्यर्थिनः
उत्तरम् :
   1. त्यजेद्विद्याम् - त्यजेत् + विद्याम् ।
   2. त्यजेत्सुखम् - त्यजेत् + सुखम् ।
   3. कृतो विद्या - कुतः + विद्या ।
   4. कुतो विद्यार्थिन: - कुतः + विद्यार्थिनः ।
3. समानार्थकशब्दं लिखत।
प्रश्न 1.
1. विद्या
2. विद्यार्थी
उत्तरम् :
1. विद्या - ज्ञानम्, शिक्षा ।
2. विद्यार्थी - छात्र:, शिष्यः, अन्तेवासी।
```

श्लोक: 2.

```
Digvijay
Arjun
1. एकवाक्येन उत्तरत।
प्रश्न अ.
कीदृशं जलं पिबेत् ?
उत्तरम् :
वस्त्रपूतं सुखं त्यजेत्।
प्रश्न आ.
की हशीं वाणी वदेत् ?
उत्तरम् :
सत्यपूतां वाणी वदेत्।
2. समानार्थकशब्दं चित्वा लिखत ।
वाक्, पवित्रम्, ऋतम्, उदकम् ।
प्रश्न 1.
समानार्थकशब्दं चित्वा लिखत ।
वाक्, पवित्रम्, ऋतम्, उदकम् ।
उत्तरम् :
   1. वाक् - वाणी।
   2. पवित्रम् - पूतम्।
   3. ऋतम् - सत्यम्।
   4. उदकम् - जलम्।
3. स्तम्भमेलनं कुरुत।
प्रश्न 1.
उत्तरम् :
```

| विशेषणम्    | विशेष्यम् |
|-------------|-----------|
| दृष्टिपूतः  | पादः      |
| वस्त्रपूतम् | जलम्      |
| मनः पूतम्   | आवरणम्    |
| सत्यपूता    | वाणी      |

```
AllGuideSite:
Digvijay
Arjun
श्लोकः 3
```

## 1. एकवाक्येन उत्तरत।

प्रश्न अ. मनुजः कीदृशं धनं काङ्केत ? उत्तरम् : मनुजः अलब्ध धनं काक्षेत। प्रश्न आ. वृद्धं धनं कुत्र निक्षिपेत् ? उत्तरम् :

वृद्धं धनं तीर्थेषु निक्षिपेत्।

# 2. क्रमानुसारं रचयत।

#### प्रश्न 1.

- 1. धनस्य रक्षणम्।
- 2. तीर्थेषु दानम्।
- 3. धनस्य इच्छा ।
- 4. धनस्य वर्धनम्।

# उत्तरम् :

- 1. धनस्य इच्छा।
- 2. धनस्य रक्षणम् ।

. ( ~~

- 3. धनस्य वर्धनम् ।
- 4. तीर्थेषु दानम् ।

#### श्लोकः 4

## 1. एकवाक्येन उत्तरत।

प्रश्न अ. क्रोधं केन जयेत्? उत्तरम् : क्रोधं अक्रोधेन जयेत्। प्रश्न आ.

उत्तरम् : दानेन कदर्य जयेत्।

दानेन किं जयेत् ?

प्रश्न इ. सत्येन किं जयेत्?

```
AllGuideSite:
Digvijay
Arjun
उत्तरम् :
सत्येन अनृतं जयेत्।
2. विरुद्धार्थकशब्द लिखत ।
क्रोधः, असाधुः, सत्यम्, दानम् ।
प्रश्न 1.
विरुद्धार्थकशब्द लिखत ।
क्रोधः, असाधुः, सत्यम्, दानम् ।
उत्तरम् :
   • क्रोध: × अक्रोधः, क्षमा।
   • असाधुः × साधुः।
   • सत्यम् × अनृतम्।
   • दानम् × कदर्यम् ।
3. श्लोकात् तृतीयान्तपदानि चित्वा लिखत ।
प्रश्न 1.
श्लोकात् तृतीयान्तपदानि चित्वा लिखत ।
उत्तरम् :
तृतीया - अक्रोधेन, साधुना, दानेन, सत्येन
4. सन्धिविग्रहं कुरुत ।
चानृतम्।
प्रश्न 1.
चानृतम्।
उत्तरम् :
चानृतम् - च + अनृतम्।
श्लोक: 5
1. एकवाक्येन उत्तरत।
प्रश्न अ.
प्रत्यहं किं प्रत्यवेक्षेत ?
उत्तरम् :
प्रत्यहं आत्मनः चरितं प्रत्यवेक्षेत।
प्रश्न आ.
चरितं केन तुल्यं माऽस्तु ?
उत्तरम् :
चरितं पशुभिः तुल्यं माऽस्तु।
```

```
AllGuideSite:
Digvijay
Arjun
प्रश्न इ.
चरितं केन तुल्यम् अस्तु ?
उत्तरम् :
चरितं सत्पुरुषे : तुल्यम् अस्तु।
2. सन्धिं कुरुत।
प्रश्न अ.
पशुभिः + तुल्यम्
उत्तरम् :
पशुभिस्तुल्यम् - पशुभिः + तुल्यम् ।
प्रश्न आ.
किम् + नु
उत्तरम् :
किन्नु - किम् + नु।
प्रश्न इ.
सत्पुरुषैः + इति
उत्तरम् :
सत्पुरुषैरिति - सत्पुरुषैः + इति।
प्रश्न ई.
नरः + चरितम्
उत्तरम् :
नरश्चिरतमात्मनः - नरः + चरितम् + आत्मनः ।
3 समानार्थकशब्दानां युग्मं चिनुत ।
प्रश्न 1.
उत्तरम् :
 3
                                               आ
                                               प्रतिदिनम्
 प्रत्यहम्
                                               मनुज:
 नर:
```

वर्तनम्

चरितम्

| Digvijay  |   |   |  |
|---|---|---|--|
| Arjun   |   |   |  |
| पशुः  | मृगः  |   |  |
| तुल्यः  | समः   |   |  |
| सत्पुरुषाः  | सज्जनाः   |   |  |
| Sanskrit Anand Class 9 Textbook Solution and Answers  | ns Chapter 4 विध्यर्थमाला Additional Importa                                      | nt Questions  |  |
| विभक्त्यन्तरूपाणि।  |   |   |  |
| <ol> <li>प्रथमा - विद्या, सुखम्, विद्यार्थी, सुखार्थी।</li> <li>द्वितीया - विद्याम, सुखम्।</li> </ol>   |   |   |  |
| लकारं लिखत।   |   |   |  |
| 4. वदेत् - वद् धातुः प्रथमगणः परस्मैपदं वि 5. समाचरेत् - सम् + आ + चर् धातुः प्रथम 6. वर्धयेत् - वृध् - वर्धधातुः प्रथमगणः आत्व 7. जयेत् - जि - जय् धातुः प्रथमगणः परस् 8. पश्येत् - दृश् - पश्य् धातुः प्रथमगणः पर 9. अयित् - ऋधातुः प्रथमगणः परस्मैपदं प्र 10. प्रत्यवेक्षेत - प्रति + अव + ईश् ध 11. चिन्तयेत् - चिन्त् धातुः दशमगणः 12. पराक्रमेत् - परा + क्रम् धातुः प्रथमगणः 13. अवलुम्पेत - अव + लुम्प् धातुः ष | दं विधिलिङ्लकारः प्रथमपुरुषः एकवचनम्।<br>मैपदं विधिलिङ्लकारः प्रथमपुरुषः एकवचनम्। | भवचनम्।<br>षः एकवचनम्।<br>चनम्।<br>चनम्।<br>प्रथमपुरुषः |  |
| पद्यांशं पठित्वा जालरेखाचित्रं पूरयत ।  |   |   |  |
| ਸ਼ੁੰਝਰ 1.   |   |   |  |
| उत्तरम् :   |   |   |  |
| प्रश्न 2.   |   |   |  |
| उत्तरम् :   |   |   |  |

| AllGuideSite:  |
|--|
| Digvijay   |
| Arjun  |
| प्रश्न 3.  |
| उत्तरम् :  |
| प्रश्न 4.  |
| उत्तरम् :  |
| प्रश्न 5.  |
| उत्तरम् :  |
| प्रश्न 6.  |
| उत्तरम् :  |
| प्रश्ननिर्माणं कुरुत।  |
| प्रश्न 1.  |
| 1. दृष्टिपूतं पादं न्यसेत्।  |
| 2. मन:पूतं समाचारेत्।  |
| उत्तरम् :  |
| 1. कथं पादं न्यसेत?  |
| 2. मन:पूतं किं कुर्यात् ? (पद्यांशं पठित्वा जालरेखाचित्रं पूरयत। ) |
| प्रश्न 2.  |
| 1. लब्धं धनं प्रयत्नतः रक्षेत्।                                    |
| 2. रक्षितं धनं सम्यक् वर्धयेत।                                     |
| उत्तरम् :  |
| 1. लब्धं धनं कथं रक्षेत?   |
| 2. की दशं धनं सम्यक् वर्धयेत?                                      |
|  |
| प्रश्न 3.  |
| 1. असाधुं साधुना जयेत्।  |
| 2. दानेन कदर्य जयेत्।  |
| उत्तरम् :  |
| 1. असा, केन जयेत्?   |
| 2. दानेन किं जयेत्?  |
|  |

# विभक्त्यन्तरूपाणि

- प्रथम नरः।
- द्वितीया दुःखाधिकान्, सुखाधिकान्, आत्मानम्।
- तृतीया पशुभिः, सत्पुरुषैः।
  चतुर्थी शोकहर्षाभ्याम्, शत्रुभ्याम्।

```
Digvijay
Arjun
   • सप्तमी - दुःखे, सुखे।
प्रवनिर्माणं कुरुत।
प्रश्न 1.
शत्रुभ्याम् इव शोकहर्षाभ्याम् आत्मानं न अर्पयेत्।
उत्तरम् :
काभ्याम् इव शोकहर्षाभ्याम् आत्मानं न अर्पयेत्?
प्रश्न 2.
   1. नर: आत्मनःचरितं प्रत्यवेक्षेत।
   2. प्रत्यहम् आत्मनः चरितं प्रत्यवेक्षेत।
   3. मे चरितं पशुभिः तुल्यम्।
   4. मे चरितं सत्पुरुषै : तुल्यम्।
   5. नृपः बकवत् अर्थान् चिन्तयेत्।
   6. नृपः सिंह: इव पराक्रमेत् ।
उत्तरम् :
                                                                  ..0.
   1. कआत्मनःचरितं प्रत्यवेक्षेत?
   2. कदा आत्मन: चरितं प्रत्यवेक्षेत?
   3. मे चरितं कै: तुल्यम्?
   4. मे चरितं कै: तुल्यम्?
   5. नृपः बकवत् कान् चिन्तयेत्?
   6. नृपः कः इव पराक्रमेत्?
सूचनानुसारं कृती: कुरुत।
प्रश्न 1.
विशेषण - विशेष्य - सम्बन्धः।
'धनम्' इति शब्दस्य चत्वारि विशेषणनि चिनुत ।
उत्तरम् :
```

# लेखनकौशलम्

अलब्धम्, लब्धम्, रक्षितम्, वृद्धम्।

AllGuideSite:

- हर्षः वर्षाकाले हर्ष : भवेत्। वर्षाकाले प्रमोदः/ आनन्द: भवेत्।
- वचः गुरोः वचः अनुकरणीयः। गुरोः व्याहारः अनुकरणीयः।
- शत्रुः सः शत्रुः अतीव बलवान् आसीत्। सः रिपुः / वैरी अतीव बलवान् आसीत्।

### व्याकरणम् :

# शब्दानां पृथक्करणम्

| नाम | क्रियापदम् | विशेषणम् |
|-----|------------|----------|
|     |            |          |

# Digvijay

# Arjun

| विद्या, साधुना, सत्पुरुषैः | त्यजेत्, न्यसेत्, निक्षिपेत्, जयेत्              | दृष्टिपूतम् |
|----------------------------|--|-------------|
| विद्याम्, दुःखे            | पिबेत्, वदेत्, पश्येत्, अर्पयेत्,<br>विनिष्पतेत् | वस्त्रपूतम् |
| वाणीम्, शत्रुभ्याम्        | समाचारेत्, काक्षेत, प्रत्यवेक्षेत,<br>चिन्तयेत्  | मन:पूतम्    |
| क्रोधम, पशुभिः             | रक्षेत्, वर्धयेत्, पराक्रमेत्                    | सत्यपूताम्  |

#### समासाः।

| समासनाम        | अर्थ:                  | समासविग्रहः                 | समासनाम्                |
|----------------|------------------------|-----------------------------|-------------------------|
| शोकहर्षाभ्याम् | grief and<br>happiness | शोकःच, हर्ष:च,<br>ताभ्याम्। | इतरेतर द्वन्द्व<br>समास |
| दृष्टिपूतम्    | purified by sight      | दृष्ट्या पूतम्।             | तृतीया तत्पुरुष<br>समास |
| वस्त्रपूतम्    | purified by cloth      | वस्त्रेण पूतम्।             | तृतीया तत्पुरुष<br>समास |
| सत्यपूताम्     | purified with truth    | सत्येन पूता, ताम्।          | तृतीया तत्पुरुष<br>समास |
| मन:पूतम्       | purified with mind     | मनसा पूतम्।                 | तृतीया तत्पुरुष<br>समास |

# विध्यर्थमाला Summary in Marathi and English

#### प्रस्तावना :

सुभाषिते हा संस्कृत साहित्याचा अविभाज्य भाग आहे. सुभाषिते कमी शब्दात खोल अर्थ सांगतात. सुभाषिते मनोरंजक तसेच माहितीपर असतात. काही सुभाषिते आपण कसे वागावे, काय करावे, काय करू नये हे सांगतात.

प्रस्तुत पद्य पाठामध्ये अशाच सुभाषितांचा समावेश आहे, जी आपल्याला काय करावे आणि काय करू नये ते सांगतात. "विध्यर्थ" (विधि-अर्थ) हा शब्द आपल्याला क्रियेची गरज सांगतो.

### Digvijay

#### Arjun

We know that subhashitas that are an integral part of Sanskrit literature convey a very deep meaning. They are entertaining, as well as informative. Some subhashitas guide us as to how we should behave, what we should do and what are the things we should not do.

As the name suggests विध्यार्थमाला is a collection of beautiful slokas that tell us what we should do and what we should not do. The word foraf (विधि-अर्थ) tells the worth, necessity of an action.

### श्लोकः 1

सुखार्थी ..... सुखम् ।।1।।

श्लोकः : सुखार्थी चेत् त्यजेद्विद्यां विद्यार्थी चेत् त्यजेत्सुखम्। सुखार्थिनः कृतो विद्या कृतो विद्यार्थिनः सुखम् ।।1।। (अनुष्टुभ)

अन्वयः सुखार्थी चेत् विद्यां त्यजेत्। विद्यार्थी चेत् सुखं त्यजेत्। सुखार्थिनः विद्या कृतः? विद्यार्थिनः सुखं कृतः?

# अनुवादः

सुखाची इच्छा असणाऱ्याने विद्येचा त्याग करावा. विद्येची इच्छा असणाऱ्याने सुखाचा त्याग करावा. सुखाची इच्छा असणाऱ्यांस विद्या कुठून मिळणार? विद्येची इच्छा असणाऱ्यांस सुख कुठून मिळणार?

If a person desires comforts he should give up knowledge. If a person desires knowledge he should give up comforts. From where do the ones yearning for comforts get knowledge? From where do the ones desiring knowledge get comfort?

#### श्लोकः 2

दृष्टिपूतं ..... समाचारेत् ।।2।।

श्लोकः : दृष्टिपूतं न्यसेत् पादं वस्त्रपूतं पिबेत् जलम्। सत्यपूतां वदेत् वाणीं मनःपूतं समाचारेत् ।।२।। (मन्स्मृतिः) (अनुष्टुभ)

अन्वयः दृष्टिपूतं पादं न्यसेत् । वस्त्रपूतं जल पिबेत् । सत्यपूतां वाणी वदेत् । मन:पूतं समाचरेत्।

#### अन्वादः

योग्यरीत्या पाहून पाय ठेवावा. वस्त्राने गाळून घेतलेले पाणी प्यावे. सत्याने पवित्र झालेली भाषा बोलावी आणि योग्य रीतीने विचार करुन (मनन करून) वर्तन करावे.

One should take a step after seeing. One should drink water purified by a cloth. One should speak words purified with truth and one should act after thinking.

#### श्लोकः 3

धनमलब्ध ..... निक्षिपेत ।।३।।

Digvijay

Arjun

श्लोकः : धनमलब्धं काङ्क्षत, लब्धं रक्षेत् प्रयत्नतः।

रक्षितं वर्धयेत् सम्यक्, वृद्ध तीर्थेष् निक्षिपेत् ।।3।। (अन्ष्ट्भ)

अन्वयः : अलब्धं धनं काहक्षेत। लब्ब (धन) प्रयत्नतः रक्षेत्। रक्षितं (धन) सम्यक् वर्धयेत्। वृद्धं (धन) तीर्थेषु निक्षिपेत्।।

# अनुवादः

न मिळालेल्या धनाची इच्छा करावी. प्राप्त झालेल्या धनाचे प्रयत्नपुर्वक रक्षण करावे. रक्षण केलेले धन चांगल्या रीतीने वाढवावे. अधिक (वाढलेले) धन तीर्थक्षेत्री / चांगल्या ठिकाणी (कार्यात) दान करावे.

One should wish for wealth which is not obtained. One should protect that which is obtained with efforts. That which is protected should be enhanced properly and the wealth which is enhanced should be put into good use. (given in charity)

# श्लोकः 4

अक्रोयेन ..... चानृतम् ।।४।।

श्लोकः : अक्रोधेन जयेत् क्रोधम् असाधु साधुना जयेत्। जयेत् कदयं दानेन जयेत् सत्येन चानृतम् ।।4।।(अनुष्टुभ्)

अन्वयः : अक्रोधेन क्रोधं जयेत् । साधुना असाधुं जयेत् । दानेन कदर्य जयेत् । सत्येन च अनृतम् जयेत्।

# अनुवादः

क्रोधाला शांततेने (क्षमेने) जिंकावे, सज्जनाने दुष्टाला जिंकावे (चांगल्याने | वाईटाला जिंकावे), कंजूषपणाला दानाने जिंकावे आणि सत्याने असत्याला जिंकावे.

One should win over anger with calmness. One should win over the wicked with goodness. One should win over miserliness with charity and one should win over falsehood with truth.

#### श्लोकः 5

प्रत्यहं ..... सत्पुरुषैरिति ।।६।।

श्लोकः : प्रत्यहं प्रत्यवेक्षेत नरश्चरितमात्मनः ।

किन्नु मे पशुभिस्तुल्यं किन्नु सत्पुरुषैरिति ।।६।। (अनुष्टुभ)

अन्वयः नरः आत्मनः चरितं प्रत्यहं प्रत्यवेक्षेत किं नु मे (चरित) पशुभिः तुल्यम्? किं नु (मे चरित) सत्पुरुषैः (तुल्यम्) इति।

# अनुवादः

मनुष्याचे स्वत:च्या चारित्र्याकडे (वर्तनाकडे) बारकाईने दररोज पाहावे (आणि विचारावे) "खरेच माझे बर्तन पश्समान आहे की सज्जनांसमान?"

### Digvijay

### **Arjun**

Man should observe his behaviour daily (and ask) "Did I behave like animals? Or did I behave like good people?"

# सन्धिविग्रहः

- धनमलब्धम् धनम् + अलब्धम् ।
- सिंहवच्च सिंहवत् + च।
- वृकवच्च वृकवत् + च।

# विरुद्धार्थकशब्दाः

- त्यजेत् × स्वीकुर्यात, गृहणीयात् ।
- सुखम् × दुःखम् ।
- अलब्धम् × लब्धम्।
- सत्यम् × असत्यम्।
- पूतम् × मलिनम्, अस्वच्छम, अमङ्गलम् ।
- सत्पुरुषाः × दुर्जनाः, खलाः, दुष्टाः।

# समानार्थकशब्दाः

- 1. वाणी वाक्, भाषा, ब्राहमी, भारती, गिर्।
- 2. पूतम् पवित्रम्, पावनम् ।
- 3. सत्यम् ऋतम् ।
- 4. जलम् नीरम्, उदकम्, तोयम्, अम्ब्, पयः ।
- 5. काक्षेत इच्छेत्।
- 6. लब्धम् प्राप्तम्।
- 7. धनम् वित्तम्, अर्थम्, द्रविणम्।
- 8. सम्यक् सुष्ठु ।
- 9. कोधः रोषः।
- 10. असाधुः दुष्ट, दुर्जनः।
- 11. कदर्यम् कृपणता।
- 12. सत्यम् ऋतम्।
- 13. असत्यम् अनृतम्।
- 14. दु:खम् शोकः।
- 15. हर्षः आनन्दः।
- 16. शत्रुः रिपुः, अरिः, वैरी।
- 17. अधिकम् प्रभूतम्, बह्।
- 18. सिंहः वनराजः, केसरी, मृगेन्द्रः।
- 19. शश: शशकः।
- 20. प्रत्यहम् प्रतिदिनम्।
- 21. नरः मनुजः, पुरुषः।
- 22. चरितम् वर्तनम्।
- 23. पशुः प्राणी, मृगः।
- 24. तुल्यः समः।

# Digvijay

### Arjun

25. सत्प्रुषाः - सज्जनाः।

# शब्दार्थाः

- 1. सुखार्थी one who wishes happiness सुखाची इच्छा असणारा
- 2. चेत् if जर
- 3. विद्या knowledge विद्या, ज्ञान
- 4. त्यजेत् should leave त्याग करावा
- 5. कुतः from where/how कुठून
- 6. सुखम् happiness सुख
- 7. दृष्टिपूतम् after seeing (purified by sight) नीट पाह्न
- 8. न्यसेत् should place ठेवावे
- 9. समाचरेत् should act वागावे
- 10. काङ्क्षेत should wish इच्छा करावी
- 11. रक्षेत् shoul protect रक्षण करावे
- 12. प्रयत्नतः with efforts प्रयत्नपूर्वक
- 13. वर्धयेत् should enhance वाढवावे
- 14. सम्यक् properly योग्यरीत्या
- 15. क्रोध anger राग
- 16. अक्रोधेन with calmness शांततेने
- 17. असाधु wicked दुष्ट
- 18. कदर्यम् miserliness कंजूषपणा
- 19. अनृतम् falsehood असत्य
- 20. दुःखे in sorrow दुःखात
- 21. आत्मानम् oneself स्वत:ला
- 22. सुखे in happiness सुखात
- 23. शोकहर्षाभ्याम् to sorrow and happiness दु:ख व सुखाला
- 24. न अर्पयेत् should not surrender समर्पित करू नये
- 25. आत्मनः of oneself स्वत:चे
- 26. चरितम् behaviour वर्तन
- 27. प्रत्यहम् everyday दररोज
- 28. प्रत्यवेक्षेत observe परीक्षण करावे
- 29. त्ल्यम् like सारखे, त्लना करण्यायोग्य
- 30. बकवत् like a crane बगळ्याप्रमाणे
- 31. सिंहवत् like a lion सिंहाप्रमाणे
- 32. वृकवत् like a wolf लांडग्याप्रमाणे
- 33. शशवत् like a rabit सश्याप्रमाणे
- 34. अवल्म्पेत should tear down फाडावे, नामोहरम करावे
- 35. विनिष्पतेत् should get out of बाहेर पडावे
- 36. चिन्तयेत् should think विचार करावा
- 37. पराक्रमेत् should be brave पराक्रम करावा